अहिंसक प्रतिरोध के परिप्रेक्ष्य में सत्याग्रह गीता का अनुशीलन

डॉली जैन
512, रामानुजन आवास, वनस्थली विद्यापीठ टोंक (राज.)

महात्मा गाँधी ने भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता के आध्यात्मिक मूल्यों की परम्परा को परिष्कृत करके और उसे युगधर्म के अनुरूप ढाल कर इस देश की परम उन्नति की है। गाँधी विचारधारा में सर्वोच्च महत्त्व सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को प्राप्त है। सत्य और अहिंसा को गाँधी जी मनुष्य के अन्तर्निहित धार्मिक भाव के विकास हेतु अपरिहार्य समझते थे। गाँधी जी मनुष्य तथा समाज की परिस्थितियों में सुधार लाने हेतु हिंसात्मक साधनों में नहीं अपितु अहिंसात्मक साधनों में विश्वास करते थे। अहिंसा आत्मिक बल की सूचक है, जिसके विरोध में भौतिक बल चाहे कुछ समय हेतु विजयी हो जाए, किन्तु अन्ततोगत्वा उसे पराजित होना ही पड़ेगा।

महात्मा गाँधी के चमत्कारी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक भाषाओं में गाँधीजी से सम्बद्ध साहित्य रचा गया। संस्कृत भाषा भी इससे अछूती नहीं है। संस्कृत भाषा में गाँधी जी से सम्बद्ध 30 से भी अधिक ग्रन्थ लिखे गए हैं जो काव्य की अनेक विधाओं जैसे महाकाव्य, खण्डकाव्य, दृश्यकाव्य, गद्यकाव्य से सम्बद्ध हैं। ''सत्याग्रह गीताा'' गाँधी जी के जीवन व व्यक्तित्व को आधार बनाकर लिखा गया महाकाव्य है। ''सत्याग्रह गीता'' नामक काव्य की रचयित्री लब्ध प्रतिष्ठ दाक्षिणात्य विदुषी पण्डिता क्षमाराव हैं। आपका जन्म महाराष्ट्र के अन्तर्गत पूना में सन् 1890 को हुआ। यह महाकाव्य सन् 1932 में लिखा गया है। अहिंसात्मक आन्दोलन से लेकर सन् 1931 के गाँधी इरविन पैक्ट तक का ब्यौरेवार विवरण ''सत्याग्रह गीता'' नामक कृति में दिया गया है। प्रस्तुत महाकाव्य की सर्गानुसार संक्षिप्त कथावस्तु इस प्रकार है :–

प्रथम अध्याय :

सत्यवादी महात्मा गाँधी भारतीय बन्धुओं की सहायता के लिए अफ्रीका जाकर वहाँ की गोरी सरकार के साथ निर्भयता पूर्वक युद्ध करते हैं। वह भारत की दीनता, दरिद्रता एवं हीनता के प्रति परतन्त्रता को कारण मानते हुए एवं परतन्त्रता को मृत्यु के समान बताते हुए उसके विनाश हेतु कृत संकल्प हो जाने की प्रेरणा देते हैं। देशवासियों को स्वहस्त निर्मित वस्त्र धारण करने की प्रेरणा देते हैं।

द्वितीय अध्याय :

गाँधी जी किसी अन्त्यज वर्ग की महिला की आपन्नावस्था से विक्षुब्ध होकर स्वयं अल्प वस्त्र धारण करने की ठान लेते हैं। गाँधी कृषकोद्धार एवं देश की समुन्नति हेतु विदेशी वस्त्रों को अग्नि को समर्पित करके विदेशी वस्तुओं के प्रति जन–जन के मन में तिरस्कार भाव उत्पन्न करके खादी वस्त्र धारण करने के प्रति आस्था जगाते हैं।

तृतीय अध्याय :

उन्होंने कृषक वर्ग को कर रूपी अन्याय से मुक्त करवाने के लिए सत्याग्रह किया और उन्हें विजय प्रदान करवायी।

चतुर्थ अध्याय :

गाँधी जी ने स्व बान्धवों के क्लेशों को दूर करने के लिए साबरमती आश्रम की स्थापना की। आत्मरक्षा के लिए अहिंसा को सर्वश्रेष्ठ साधन मानते हुए पलायनवादी होने की अपेक्षा मृत्यु के मुख में चले जाना अधिक श्रेयस्कर माना है।

पंचम अध्याय, षष्ठ अध्याय :

तात्कालिक शासक वर्ग द्वारा स्वराज्य प्रदान करने का आश्वासन देने के कारण एवं साम्राज्य के उपकार में ही भारत का कल्याण निहित जान कर गाँधी जी ने प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेज सरकार की सहायता करने का निश्चय किया किन्तु उनके द्वारा बढ़ते हुए अत्याचारों के कारण गाँधी जी ने अहिंसा का व्रत लिया। अंग्रेजों के अत्याचारों से पीड़ित जनता ने राजमहलों को भस्म करना जैसे दृष्कृत्य करने प्रारम्भ कर दिए। डायर नामक दुरात्मा शासक ने जनता पर खूब अत्याचार किए। जलियाँवाला बाग काण्ड इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सप्तम अध्याय–नवम अध्याय :

महात्मा गाँधी ने देश की दरिद्रता निवारण हेतु नमक कर का विनाश करने का बीड़ा उठाया।

दशम अध्याय – सप्तदश अध्याय :

गाँधी जी द्वारा संचालित अहिंसात्मक आन्दोलन में भाग लेने वाले देशभक्त नायकों, वृद्धों, महिलाओं एवं बालक–बालिकाओं पर अंग्रेज शासकों ने जो निर्मम एवं नृशंसतापूर्ण आचरण किया, उसका वर्णन है। गाँधी जी ने कृषकोद्धार, अन्त्यजोद्धार एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके देश को उन्नति के पथ पर ले जाने का प्रयास किया।

अष्टादश अध्याय :

अन्त में दिव्य चरित्र से मण्डित महात्मा गाँधी की महिमा चिरकाल तक रहेगी और भारत की स्वतन्त्रता अवश्यम्भावी है, ऐसी कामना की गई है।

प्रस्तुत महाकाव्य के अनुसार गाँधी जी के अहिंसक प्रतिरोध का स्वरूप इस प्रकार है:–

- गाँधी जी के अनुसार अहिंसा परम धर्म कहा गया है।[1]मन, वचन व कर्म से हिंसा न करना ही अहिंसा है। अहिंसा से ही सिद्धि प्राप्त होती है।[2] धैर्यशील मनुष्य को मृत्यु के मुख में जाने पर भी अहिंसा का पालन करना चाहिए।[3] अहिंसा अपने पाप को नाश करने वाली है और शत्रुओं का दमन करने वाली है।[4] इसी अहिंसा को आधार बनाकर अहिंसक प्रतिरोध प्रारम्भ हुआ। गाँधीजी का विश्वास था यदि हिंसा रहित संसार एक लक्ष्य में रत हो कर हिंसारहित आचरण को प्रयोग में लाए तो पत्थरों के हृदय भी नरम हो जाऐंगे।[5]
- राज्य के अधिकारियों के प्रजा के अहित के लिए उद्यत होने पर प्रजा को उनका बलपूर्वक विरोध करने का अधिकार है।[6] हिंसा रहित क्रोध जीत कर, अपने–अपने कामों में प्रवृत्त होकर, शस्त्र और अस्त्र के बल से विहीन मनुष्यों का महान् बल सत्याग्रह है।[7] सत्य का बल सब बलों से बढ़कर है। सत्याग्रही दुर्बल होता हुआ भी असत्यवादी बलवान से अच्छा है।[8]गाँधी जी के अनुसार शान्ति रूपी बल में प्रधान होता हुआ भी यह मार्ग बहुत कठिन है। सत्य की विजय प्रायः घोरतम अर्थात् अति कठिन क्लेश उठाए बिना नहीं मिलती है।[9] गाँधी जी

---

1 अहिंसा परमो धर्म इति निर्णयमागतः।
सत्याग्रह गीता – 3/1

2 हिंसां न कोऽपि कुर्वीत मनोवाक्कायकर्मभिः।
अहिंसयैव सिद्धिः स्यादित्याह स पुनः पुनः।।
सत्याग्रह गीता – 3/2

3 अहिंसा पालयेन्मर्त्यो धीरो मृत्युमुखेऽपि सन्।
यस्य धैर्यमिदं नास्ति स कुर्वीत बलात्कृतिम्।।
सत्याग्रह गीता – 3/16

4 अहिंसा निजपापघ्नी दमनी च द्विषामपि।
सत्याग्रह गीता – 4/15

5 एकलक्ष्योऽथ चेल्लोकश्चरेद्धिंसाविवर्जितः।
क्लेशैरार्द्रीभविष्यन्ति पाषाणाह्रदयान्यपि।
सत्याग्रह गीता – 10/32

6 राज्याधिकारिणां वर्गे लोकानाम हितोद्यते।
प्रजानामधिकारोऽस्ति बलात्तेषां विरोधने।।
सत्याग्रह गीता – 3/18

7 अहिंसका जितक्रोधाः प्रवर्तध्वं स्वकर्मणि।
शस्त्रास्त्रबलहीनानां बलं सत्याग्रहः परम्।।
सत्याग्रह गीता – 3/21

8 बलं सर्वबलेभ्योऽपि सत्यस्यैवातिरिच्यते।
सत्यवानबलः श्रेयान् सबलात्सत्यवर्जितात्।
सत्याग्रह गीता – 4/8

9 शान्तिसत्त्वप्रधानोऽपि मार्गोऽयं विषमः परम्।
न सत्यस्य जयः प्रायः क्लेशाद् घोरतमादृते।।
सत्याग्रह गीता – 10/29

सत्याग्रह से बँधकर ही राजा के शासन को तोड़ना और सब स्थानों पर इस व्रत के अद्‌भुत बल की घोषणा करना चाहते हैं।[1]

- ❖ असहयोग आन्दोलन भी अहिंसक प्रतिरोध का एक प्रकार है। अपना अर्थात् स्वयं का जो काम व्यवसाय रूप में किया जाता है उससे हट जाना अर्थात् अपने काम से असहयोग करना असहयोग आन्दोलन का स्वरूप है।[2]
- ❖ सविनय अवज्ञा आन्दोलन भी अहिंसक प्रतिरोध का एक प्रकार है। नमक कर अधिनियम के विरोध में गाँधी जी कहते हैं कि अधार्मिक नियमों में नमक सम्बन्धी नियम सबसे अधिक पापीयान् है। इसलिए अपने अनुयायियों के साथ उसको सबसे पहले तोड़ूँगा।[3]उपाधियों व पदों का त्याग भी इसका एक हिस्सा है। जलियाँ वाला बाग हत्याकाण्ड के बाद गाँधी जी ने राजा की ओर सेसंप्राप्त कीर्ति मुद्रा लौटा दी।[4] रवीन्द्रनाथ टैगोर जो सम्राट द्वारा सम्मानित हुए थे, उन्होंने भी सम्मान मुद्राओं का परित्याग किया।[5]
- ❖ विदेशी वस्त्रों व वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी को अपनाना भी गाँधी जी के आन्दोलन का एक हिस्सा था। पण्डिता क्षमाराव ने अनेकत्र इसका उल्लेख किया है। परदेश में बने वस्त्रों का बहिष्कार करना चाहिए। विदेशी वस्त्रों में आसक्ति से अपने देश के उद्यम का नाश होता है।[6]भारतवर्ष के उत्थान के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए।[7] बहिष्कार से अंग्रेज निर्बल हो जाऐंगें। उनका व्यापार नष्ट हो जाने से स्वतन्त्रता निश्चित है।[8] खादी को छोड़कर दूसरा वस्त्र नहीं पहनना चाहिए[9] क्योंकि खादी दीन जनों को भोजन देने वाला है।[10]
- ❖ इसी प्रकार मद्यपान निषेध भी गाँधी जी के आन्दोलन का हिस्सा था। गाँधी जी के अनुसार शराब आत्मघातक है इसलिए इस सर्वविध्वंसकारी मद्य को त्याग देना चाहिए।[11]

---

1 सत्याग्रहेण बद्धोऽहं भंक्ष्यामि नृपशासनम्।
घोषयिष्ये च सर्वत्र व्रतस्यास्याद्‌भुतं बलम्।।
सत्याग्रह गीता – 10/28

2 विरम्यतां निजोद्योगाादिति लोकान्निबोध्य च।
तपोभिर्लङ्घनैर्ध्यानैरहिंसाव्रतमाचरत्।।
सत्याग्रह गीता – 5/10

3 अधर्म्येषु विधानेषु पापिष्ठो लावणो नयः।
तस्य भंगमतः पूर्वं करिष्येऽहं सहानुगैः।।
सत्याग्रह गीता – 10/40

4 तेनापूर्वाप्रसंगेन गान्धिर्भूत्वातिदुः खितः।
कीर्तिमुद्रां नृपाल्लब्धां प्रत्यार्पयत निर्भयम्।।
सत्याग्रह गीता – 5/37

5 रवीन्द्रनाथपूर्वा ये मानिताश्चक्रवर्तिना।
तेऽपि सम्मानमुद्राणां परित्यागमकुर्वत।।
सत्याग्रह गीता – 5/38

6 परदेशीयवस्त्राणां विधातव्या बहिष्कृतिः।
विदेशवसनासक्तिः स्वदेशोद्यमनाशिनी।।
सत्याग्रह गीता – 2/30

7 भारताभ्युदयायाऽतः कुरुध्वं दृढनिश्चयम्।
परदेशीयवस्तूनां विदद्‌ध्वं च बहिष्कृतिम्।।
सत्याग्रह गीता – 3/39

8 नैर्बल्यमुपयास्यस्ति बहिष्कारेण चांगलाः।
तद्‌व्यापारे च विध्वस्ते स्वातन्त्र्यं नः सुनिश्चितम्।।
सत्याग्रह गीता – 3/40

9 खादिवस्त्रात्परं वासो नैव धार्यं कदाचन।
सत्याग्रह गीता – 3/41

10 क्रीणीध्वं खद्‌दरं वासो दीनानामन्नदायकम्।
सत्याग्रह गीता – 12/40

11 अहो मद्यमिदं नूनं बान्धवा आत्मघातकम्।
निवर्तध्वमतस्तस्मात्सर्वविध्वंसकारणात्।।
सत्याग्रह गीता – 12/42

- छूआछूत निषेध के लिए गाँधी जी ने बहुत प्रयत्न किए। उनके अनुसार शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा किसान भगवान की दृष्टि में सब समान हैं। विकार तो मनुष्य ने बनाए हैं।[1] हरिजनों का निरादर करने का किसी को भी अधिकार नहीं है। यह मलिन काम के योग्य हैं, ये कहना तो पाप है।[2] उनका उद्धार करना सबसे बड़ा धर्म है।[3]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गाँधी जी का अहिंसक प्रतिरोध बहुत व्यापक था। उसमें समाज सुधार से लेकर विदेशी सत्ता का विरोध तक शामिल था। ये प्रतिरोध इतना शक्तिशाली था जिसने ब्रिटिश सत्ता जैसे आतताइयों को भारत छोड़कर जाने व भारत को स्वतन्त्र करने के लिए मजबूर कर दिया।

[1] शूद्रो वा ब्राह्मणो वापि क्षत्रियो वा कृषीवलः।
देवदृष्ट्या समाः सर्वे विकृतिस्तु नरोद्भवा।।
सत्याग्रह गीता – 2/19

[1] अतोऽन्त्यजनानवज्ञातुं नाधिकारोऽस्ति कस्यचित्।
अमी मलिनकर्माहा इत्युक्तिर्ननु किल्विषम्।।
सत्याग्रह गीता – 2/21

[1] अतस्तेषां समुद्धारो धर्मो गुरूतमो हि नः।
तदेव साधनं सम्यग् देषस्योद्धारसिद्धये।।
सत्याग्रह गीता – 2/22